नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसदद्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थपित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

विनोबा के अध्यात्म-विज्ञान के सूत्र से होगा सर्वोदय – पद्मश्री डॉ. विजय भटकर

हिंदी विश्वविद्यालय में विनोबा की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

वर्धा, 12 सितंबर, 2019 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में विशेष अतिथि के रूप में व्याख्यान देते हुए प्रख्यात वैज्ञानिक, पद्मश्री एवं उन्नत भारत अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ.

विजय भटकर ने कहा कि आचार्य विनोबा भावे के अध्यात्म और विज्ञान के दर्शन को साथ लेकर हम सर्वोदय को प्राप्त कर सकते हैं। विनोबा जी के अध्यात्म-विज्ञान और सर्वोदय के सूत्र से हम देश को आगे ले जा सकते है। उन्होंने कहा कि सभी शास्त्र विज्ञान है। ब्रम्हांड विशाल है और इसे समझना बहुत कठीन है परंतु सूत्र के आधार से हम इसे सरलता के साथ समझ सकते हैं,

इससे कई रहस्यों को समझा जा सकता है। आज हमारे सामने जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी चुनौती है। दुनिया के कई शहर धीरे-धीरे डूब रहे हैं और यह हमारे समय की बड़ी समस्या है। उन्होंने कहा कि हमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए विनोबा के अध्यात्म और विज्ञान के सूत्र को साथ लेकर चलना होगा। अध्यात्म की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि आत्मा का रूप यानी खूद का स्वरूप ही आत्मज्ञान है । पंचमहाभूत ही विज्ञान है और भौतिक, रसायन और

गणितशास्त्र ही केवल विज्ञान नहीं है परंतु जो कुछ दिखता है वह सब विज्ञान है। विज्ञान की मर्यादित व्याख्या पर विचार करना होगा और इसकी परिभाषा बदलनी होगी। यथार्थ ज्ञान ही विज्ञान है। हमारे सभी शास्त्र भारतीय दृष्टि से विज्ञान है। भाषा के संबंध में उन्होंने कहा कि आज के दौर में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक बड़ा क्षेत्र विकसित हो रहा है।गुगल इसका उदाहरण है। उन्होंने कहा कि हम कंप्यूटर के माध्यम से अनेक भाषाएं सीख सकते हैं। आज के समय में प्राकृतिक भाषा संसाधन के माध्यम से कंप्यूटर द्वारा कोई भी यहां तक कि छोटे बच्चे भी इस काम को कर सकते हैं, इसका प्रयोग हमने किया भी है। आज मानव की भाषा मशीन को समझ में आ गयी है। परंतु क्या मानवी संवेदना कंप्यूटर समझ सकता है इस पर उन्होंने कहा कि हमने तीस वर्ष पहले सुपर कंप्यूटर 'परम' का निर्माण किया था परंतु कंप्यूटर की दुनिया में परिवर्तन होकर आज मोबाइल के माध्यम से हमारे पास सुपर कंप्यूटर आया है। हमें एक भाषा से अनेक भाषाओं में अनुवाद करने वाले कंप्यूटर तैयार करने चाहिए और यह काम वर्धा से शुरू होना चाहिए।

हिंदी विश्वविद्यालय और तकनीक का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह आधुनिक तकनीक का विश्वविद्यालय होना चाहिए । आपने कंप्यूटर के क्षेत्र में बड़ा काम किया है, इस दृष्टि से यहां बहुत सारी संभावनाएं है । हिंदी विश्वविद्यालय अध्यात्म और विज्ञान सीखाने वाला देश और दुनिया का एकमात्र विश्वविद्यालय बनें । जब विदेश के विद्यार्थी वर्धा में पढ़ने आएंगे उस दिन भारत विश्व गुरु बनेगा । कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की। इस अवसर पर कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रोफेसर मनोज कुमार, प्रो. आशुतोष भटनागर, डॉ. गोपाल ठाकुर मंचासीन थे।

अध्यक्षीय वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि हमारा हिंदी का विश्वविद्यालय है परंतु केवल हिंदी भाषा के नहीं अपितु हिंदी संस्कृति का भी है । गांधी जिस हिंदी संस्कृति, सभ्यता और भाषा की बात कर रहे थे उस संस्कृति को अकादमिक संस्कृति से ओतप्रोत पीढ़ी के निर्माण के कार्य में हमें जिने, रहने, पढ़ने, पढ़ाने और समझने का अवसर मिला है। भूदान आंदोलन का उल्लेख करते हुए उन्होंने विनोबा जी को चमत्कारिक व्यक्ति की संज्ञा दी और कहा कि भारत में लाखों एकड़ भूमि दान के रूप में प्राप्त की । महात्मा गांधी की हिंदी दृष्टि पर उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र समेत दक्षिण और पूर्वी भारत में हिंदी संपर्क की भाषा बने इसके लिए प्रयास करने वाले गांधी थे । वर्धा रचनात्मक कार्यक्रमों की भूमि है । इस भूमि पर भाषा के क्षेत्र में तकनीक का प्रयोग करते हुए पूरे विश्व के लिए ज्ञानोदय के राष्ट्र के रूप में परिवर्तीत करने की क्षमता हम में है । प्राकृतिक भाषा प्रोसेसर बनाने की दिशा में प्रयास करते हुए वैज्ञानिक दृष्टि के साथ-साथ आध्यात्मिक दृष्टि बने इसके लिए डॉ. भटकर जी ने प्रयास किए हैं । आज की दुनिया चमत्कृत है परंतु हम अध्यात्म के बोध और अनुभूति की मेधा सम्पन्नता के साथ सर्वोत्तम बनेंगे इसका हमें विश्वास है । हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं एकाकारिता की ओर कैसी बढ़े यह हमारे सामने चुनौती है । सौ-डेढ़ सौ वर्षों में भारत की बहुत सारी भाषाएं लुप्त हो चुकी है परंतु आने वाले दिनों में ऐसा नहीं होगा। सबका विकास हो उन्नत भारत के निर्माण में सभी सहयोगी बन सके । विश्व को नष्ट होने से कोई बचा सकता है तो वह गांधी, विनोबा, दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. अंबेडकर का दर्शन है जिन्होंने सामाजिक दर्शन प्रस्तुत किया था और वह अहिंसा पर आधारित था। सर्वोदय की दृष्टि विकास की समग्र दृष्टि है । भारतीय जीवन में विज्ञान, कला, तकनीक का संश्लेषण कर आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ सराबोर करते हुए देखेंगे तो यह सिद्ध हो सकेगा।

हम सब सौभाग्यशाली है इसलिए कि बा-बापू की 150वीं और आचार्य विनोबा भावे की 125वीं जयंती पर हम वर्धा में हैं। इस कार्यक्रम में जाने-माने वैज्ञानिक डॉ. विजय भटकर हमारे बीच है इससे यह सौभाग्य विशिष्ट हो जाता है । उनकी उपस्थिति से हम सब रोमांचित भी है । प्रेरणा और चुनौती भी है । यह स्वाभाविक है कि हमें विनोबा की याद आनी चाहिए । तकनीक के क्षेत्र में भाषाओं का इनपूट देने का विश्वास दे रहे है । हम आपकी अपेक्षाओं को पूरा करेंगे

इस अपेक्षा के साथ डॉ. भटकर जी का आभार जताया । प्रो.आशुतोश भटनागर ने कहा कि भारतीयता में अभिनिवेश होता है तब हम सब एक हो जाते हैं। विनोबा इसकी एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

इस अवसर पर 'श्रीगांधीचरितमानस' पुस्तक का लोकार्पण किया गया । इस पुस्तक में गांधी चरित्र को काव्यात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है । इसे विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग की ओर से प्रकाशित किया गया है । कार्यक्रम में विनोबा जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित निबंध, वादविवाद तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं के पुरस्कारों का वितरण डॉ. विजय भटकर एवं कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के हाथों किया गया । निबंध प्रतियोगिता का स्नातक स्तर का प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार क्रमश: जसप्रीत सिंह,प्रतीक खंडारे,अनिल कुमार यादव को दिया गया। परास्नातक स्तर का पुरस्कार आशीष कुमार ,रामेश्वर प्रसाद, किरण पाण्डेय को दिया गया। वादविवाद का परास्नातक स्तर का प्रथम पुरस्कार अभिषेक कुमार, द्वितीय पुरस्कार आदर्श कुमार तथा तृतीय पुरस्कार कुनाल सिंह को प्रदान किया गया। वादविवाद प्रतियोगिता का विषय 'क्या व्यवसायिक शिक्षा बेरोजगारी दूर कर सकती है' था। विनोबा भावे प्रश्नोत्तरी में आयुष हर्ष, मनोज कुमार, प्रशिक फुटाणे,प्रमोद कुमार, आशीष कुमार, संतोष कुमार, अखिल तिवारी, वैभव बलबीर और नीतू शुक्ला को प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ऋषभ मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया।

राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक और शिक्षकेतर कर्मी, शोधार्थी, विद्यार्थी, वर्धा शहर के गणमान्य नागरिक, शहर के शाला और महाविद्यालयों के अध्यापक एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।